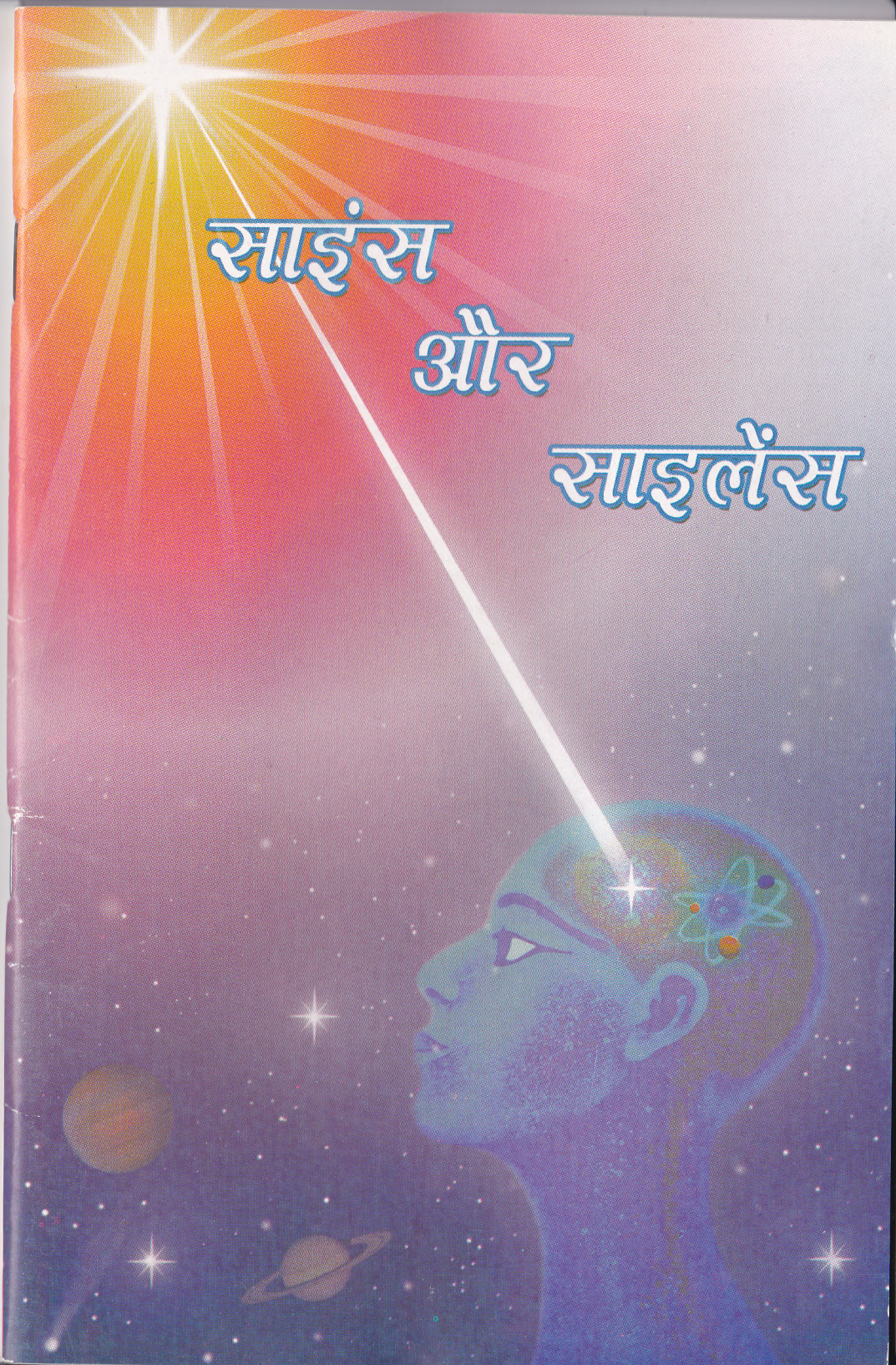


साइंस

और

साइलेंस

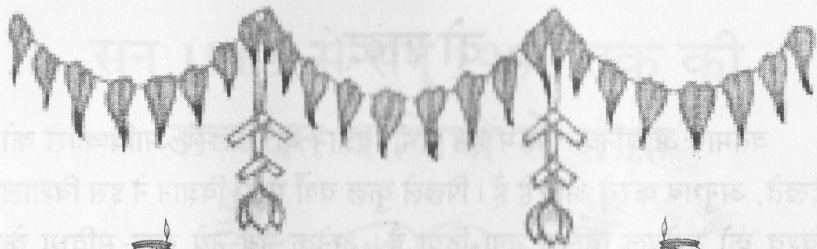


साइंस और साइलेंस के प्रति  
अव्यक्त बापदादा के उच्चारें हुए  
महावाक्य



(1969 से मार्च 2006 तक की  
अव्यक्त वाणियों से संकलन)

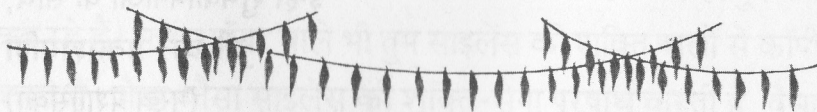
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय  
मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)



## अमृत - सूची



- 1969 से 1980 तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 5
- 1981 से 1985 तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 23
- 1986 से 1990 तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 31
- 1991 से 1995 तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 37
- 1996 से 2000 तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 41
- 2001 से 2006 मार्च तक की अव्यक्त वाणियाँ ..... 45



निराकार शिव बाबा और अव्यक्त ब्रह्मा बाबा ने  
ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से ब्रह्मा-वत्सों के  
सम्मुख साइंस और साइलेंस से सम्बन्धित जो कल्याणकारी  
महावाक्य उच्चारण किये, यह पुस्तक उनका संकलन है।

संकलनकर्ता : वैज्ञानिक व अभियन्ता प्रभाग

प्रथम संस्करण :  
अगस्त, 2006

प्रतियाँ : 5,000

प्रकाशक एवं मुद्रक:  
साहित्य विभाग,  
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन,  
शान्तिवन, आबू रोड - 307 510  
☎ - 228125, 228126

पुस्तक मिलने का पता:  
साहित्य विभाग,  
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

# सन् 1969 से सन् 1980 तक की अव्यक्त वाणियों से संग्रह



● जैसे साइंस वाले राकेट द्वारा चन्द्रमा तक पहुँचे और जितना चन्द्रमा के नजदीक पहुँचते गये उतना इस धरती की आकर्षण से दूर होते गये, पृथ्वी की आकर्षण खत्म हो गई। वहाँ पहुँचने पर बहुत हल्कापन महसूस होता है। वैसे ही तुम बच्चे जब सूक्ष्मवतन में आते हो तो स्थूल आकर्षण खत्म हो जाती है, वहाँ भी धरती की आकर्षण नहीं रहती है। यह है ध्यान द्वारा और वह है साइंस द्वारा।

● जैसे आजकल साइंसदानों ने यंत्रों के माध्यम से कहाँ-कहाँ की बातों को इतना स्पष्ट दिखाया है जो दूर की चीज़ भी पास नज़र आती है। इसी रीति से जिनका पुरुषार्थ क्लीयर होगा उनको भविष्य की हर बात दूर होते भी नजदीक दिखाई पड़ेगी।

● वह है साइंस की शक्ति का प्रोजेक्टर और यह है ईश्वरीय शक्ति का प्रोजेक्टर। जितना-जितना प्रोजेक्टर पाँवरफुल होता है उतना ही दृश्य क्लीयर देखने में आता है। वैसे ही तुम सभी बच्चों के ये दिव्य नेत्र जितना-जितना क्लीयर अर्थात् रुहानियत से सम्पूर्ण होंगे उतना ही तुम बच्चों के नयनों द्वारा कई दृश्य देख सकेंगे।

● आजकल साइंस वाले भी विस्तार को समेटने का ही पुरषार्थ कर रहे हैं। साइंस पाँवर वाले भी तुम साइलेंस की शक्ति वालों से कॉपी करते हैं। जैसा-जैसा साइलेंस की शक्ति-सेना पुरषार्थ करती है, वैसा

## दो शब्द

वर्तमान आधुनिक युग में हम सभी विज्ञान के नये-नये आविष्कारों को देखते, अनुभव करते आ रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में ही विज्ञान ने इस विशाल विश्व को ग्लोबल विलेज बना दिया है। अनेक नये-नये सुख-सुविधा के साधन भी उपलब्ध कराये हैं परन्तु साधनों के साथ विलुप्त होती साधना मनुष्य आत्माओं को और ही तनावग्रस्त बनाती जा रही है। उस साधना का आधार साइलेंस की शक्ति अर्थात् आध्यात्मिकता है, जो साइंस की भी जन्म दाता है।

जब शान्ति स्व-धर्म में टिक कर कोई भी आविष्कार किये जाते हैं तो वे संसार को स्वर्णिम बना देते हैं। परन्तु साइलेंस की शक्ति की अनुभूति के अभाव में आज अधिकतर विज्ञान के साधन भी विनाशकारी होते जा रहे हैं। समय की माँग है कि आविष्कार कल्याणकारी हों। साइंस का साइलेंस के साथ तथा भौतिक बुद्धि का दिव्य बुद्धि के साथ सन्तुलन एक बहुत बड़ी कला है। भगवान अपने बच्चों में यह कला भरना चाहते हैं।

इसी उद्देश्य से साइंस को सम्पूर्ण रूप प्रदान करने में साइलेंस की भूमिका से सम्बन्धित अव्यक्त बापदादा द्वारा उच्चार्ये हुए सन् 1969 से मार्च 2006 तक के महावाक्यों का संकलन इस पुस्तिका में किया गया है। इनको पढ़ते-पढ़ते आत्मा रूपी रॉकेट अपने अव्यक्त वतन और मूलवतन की सहज उड़ान भरने लगता है तथा जीवन सब बोझों से मुक्त, हल्का और सकारात्मक बन जाता है।

आशा है सभी भाई-बहनें भी इन महावाक्यों से प्रेरणा लेकर बापदादा की आशाओं को अवश्य साकार रूप देंगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,  
बी.के. प्रकाशमणि  
(मुख्य प्रशासिका)

करते हो? 5 हजार वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच कर सकते हो? कैचिंग पावर इतनी आई है? वह तो दूसरों की साउण्ड को कैच कर सकते हैं। आप तो असली संस्कारों को सिर्फ कैच नहीं करते, लेकिन अपना प्रैक्टिकल स्वरूप भी बनाते हो। उन्हीं की है साइंस की सत्ता और यहाँ है साइलेंस की शक्ति या सत्ता। साइंस पॉवर खत्म होगी और साइलेंस पॉवर विजयी होगी।

- अव्यक्त स्थिति का अनुभव कुछ समय लगातार करो तो जैसे साइंस द्वारा दूर की चीज़ें सामने दिखाई देती हैं, ऐसे ही अव्यक्त वतन की एक्टिविटी यहाँ स्पष्ट दिखाई देगी।

- आजकल साइंस भी स्पीड को क्विक करने में लगी हुई है। जहाँ तक हो सकता है समय कम और सफलता ज़्यादा का पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसे ही आप लोगों का पुरुषार्थ भी हर बात में स्पीड को बढ़ाने का चल रहा है?

- जैसे साइंस की परमाणु शक्ति आज क्या-से-क्या दिखा रही है। वैसे ही साइलेंस के शक्ति दल में आप प्रवृत्ति में रहने वाले प्रमाण हो। वह परमाणु शक्ति है और आप लोग सृष्टि के आगे एक प्रमाण हो। तो आप भी प्रमाण बनकर बहुत ही सर्विस कर सकते हो।

- आजकल साइंस ने भी ऐसी इन्वेंशन की है जो लिखा हुआ सभी मिट जाये, जो मालूम ही न पड़े। तो क्या आप साइलेंस की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज साफ़ नहीं कर सकते हो?

ही वे भी पुरुषार्थ कर रहे हैं। पहले साइलेंस की शक्ति सेना इन्वेंशन करती है, जैसे-जैसे यहाँ रिफाइन होते जाते हैं वैसे ही साइंस भी रिफाइन होती जाती है। जो बातें पहले उन्हीं को भी असंभव लगती थीं, वे अब सम्पूर्ण होती जा रही हैं। वैसे ही यहाँ भी असंभव बातें सरल और सम्भव होती जाती हैं।

- जैसे साइंस द्वारा कहाँ-कहाँ की बातें और कहाँ-कहाँ के दृश्य कैच कर सकते हैं, वैसे आप लोग अव्यक्त स्थिति के आधार से सम्मुख की बातों को कैच नहीं कर सकते हो?

- आजकल साइंस ने बहुत उन्नति की है जो एक स्थान पर बैठे हुए अपने अस्त्रों द्वारा एक सेकण्ड में विनाश कर सकते हैं। तो क्या शक्तियों का यह साइलेंस बल कहाँ भी बैठे एक सेकण्ड में काम नहीं कर सकता?

- जैसे साइंस में आजकल इन्वेंशन करते जाते हैं कि कोई भी गुप्त चीज़ स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाये। ऐसे ही साइलेंस की शक्ति का भी स्वतः ही प्रत्यक्ष रूप हो जायेगा। कहने व करने से नहीं होगा।

- साइंस वाले आज प्रयत्न कर रहे हैं, पृथ्वी से परे जाने के लिए। वैसे ही साइलेंस की शक्ति से इस प्रकृति के आकर्षण से परे, जब चाहें तब आधार लें, न कि प्रकृति जब चाहे तब अधीन कर दे।

- आजकल साइंस वाले आवाज को कैच करने का भी प्रयत्न करते हैं। लेकिन साइलेंस की शक्ति से आप लोग क्या कैच करते हो? जैसे वे बहुत-बहुत पहले के साउण्ड कैच करते हैं, वैसे आप क्या कैच



● जैसे आजकल साइंस ने भी ऐसी मशीनरी तैयार की है जो कोई भी इन्वेंशन डालो तो उसका उत्तर सहज ही मिल जाता है। मशीनरी द्वारा प्रश्न का उत्तर निकल जाता है तो दिमाग चलाने से छूट जाते हैं। तो ऐसे ही ऑलमाइटी अथॉर्टी को सामने रखने से, जो भी कोई प्रश्न करें, उनका उत्तर प्रैक्टिकल में आपको सहज ही मिल जायेगा।

● जैसे साइंस रिफाइन होती जाती है, ऐसे आपमें साइलेंस की शक्ति व अपनी स्थिति रिफाइन होती जा रही है? जब चीज़ रिफाइन होती है, उसमें क्या-क्या विशेषता होती है? रिफाइन चीज़ जो होती है उनकी क्वालिटी भले कम होती है लेकिन क्वालिटी पावरफुल होती है।

● साइंस प्रकृति की शक्ति है। जब प्रकृति की शक्ति साइंस, वस्तु को एक सेकण्ड में परिवर्तन कर सकती है। गर्म को शीतल, शीतल को गर्म बना सकते हैं। तो क्या परमात्म-शक्ति या श्रेष्ठ आत्मा की शक्ति अपनी दृष्टि-वृत्ति को परिवर्तन नहीं कर सकती है?

● आज एक छोटी-सी मशीनरी चीज़ को परिवर्तन कर देती है। बिल्कुल बेकार चीज़ को काम वाली बना देती है, पुरानी को नया बना देती है। तो क्या आपकी सर्वश्रेष्ठ शक्ति की सूक्ष्म मशीनरी अपनी वृत्ति-दृष्टि व दूसरे की वृत्ति-दृष्टि को परिवर्तित नहीं कर सकती?

● जब साइंस वाले पृथ्वी से स्पेस में जाने वालों की हर गति और हर विधि को जान सकते हैं तो क्या याद के बल से आप अपने श्रेष्ठ पुरषार्थ की गति और विधि को नहीं जान सकते हो? लास्ट में जानेंगे जब

● जैसे साइंस वाले अपने यंत्रों द्वारा तूफान व बारिश का आना व धरती का हिलना आदि पहले से ही जान लेते हैं, तो क्या आप सभी भी मास्टर नालेजफुल बनने से, इन एडवांस अपने बुद्धिबल द्वारा नहीं जान सकते हो?

● साइंस द्वारा एक-दो की आवाज को कैच कर सकते हैं व सुन सकते हैं। जैसे रेडियो का आवाज कैसे आता है, वायुमण्डल में जो वायब्रेशन होते हैं उनको कैच करते हैं। वायरलेस द्वारा वायब्रेशन कैच करते हैं। तो वह है वायरलेस द्वारा और यह है रुहानी पावर द्वारा।

● जब साइंस, रचना की शक्ति दिन-प्रतिदिन काल अर्थात् समय के ऊपर विजय प्राप्त करती जा रही है, हर कार्य में बहुत थोड़े समय की विधि से कार्य की सिद्धि को प्राप्त करती जा रही है, स्विच ऑन किया और कार्य सिद्ध हुआ, यह विधि है ना। तो क्या मास्टर रचयिता, अपने साइलेंस की शक्ति से व सर्व शक्तियों से एक सेकण्ड की विधि से कोई को सिद्धि नहीं दे सकते हैं?

● जब साइंस बहुत कुछ करके दिखा रही है तो क्या साइलेंस में वह शक्ति नहीं है? जितना-जितना स्वयं राजयुक्त, योगयुक्त बनते जायेंगे उतना-उतना औरों को भी बिना साज के राजयुक्त बना सकते हो।

● जब साइंस ने भी अनेक कार्य एक सेकण्ड में सिद्ध करके दिखाये हैं, सिर्फ स्विच ऑन और ऑफ करने की देरी होती है। तो यहाँ वह स्थिति क्यों नहीं बन पाती?

हो जावे, तो क्या आप महावीर, साइलेंस की शक्ति के इन्वेंटर (inventor) ऐसे प्लान (plan) बना रहे हो जो सारे विश्व को परिवर्तन होने में अथवा उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा लेने में सिर्फ एक सेकण्ड ही लगे और सहज भी हो जाये?

- जैसे आजकल साइंस वाले अपनी साइंस की नालेज के आधार पर कैसे भी दुःख के समय एक इंजेक्शन (injection) द्वारा अल्पकाल के आराम (rest) का अनुभव कराते हैं ना, वैसे ही कितनी भी आवाज और कितना भी तमोगुणी वातावरण हो लेकिन साइलेंस की शक्ति से वेस्ट (व्यर्थ) समाप्त होने के कारण बेस्ट (श्रेष्ठ) स्थिति में स्थित होने से सदा आराम (rest) अनुभव करेंगे अर्थात् सदा अपने को सुख-शान्ति की शय्या पर आराम करता हुआ अनुभव करेंगे।

- जैसे साइंस वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं और नई-नई खोज करते रहते हैं, ऐसे ही अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण व संस्कार, इन एक-एक गुण की गहराई (deepness) में जाना चाहिए।

- जैसे आजकल साइंस का रिफाइन रूप कौन-सा है? दूर से पहले ही मालूम पड़ जाता है। पहले से ही मालूम पड़ जाने के कारण सुरक्षा (safety) के साधन अपना लेते हैं। दुश्मन आवे और फिर उससे लड़कर विजय प्राप्त करें इसमें भी टाइम लग जाता है ना? आजकल जैसे साइंस की इन्वेंशन रिफाइन हो रही है, इसी प्रकार महारथियों का पुरुषार्थ भी रिफाइन होना है।

- साइंस वाले समय को और अपनी एनर्जी अर्थात् मेहनत को तथा

आवश्यकता नहीं होगी? इसके लिए कैचिंग पॉवर चाहिए, जैसे साइंस दूर की आवाज को कैच कर चारों ओर सुना सकती है। तो क्या आप लोग भी शुद्ध वायब्रेशन, शुद्ध वृत्तियों व शुद्ध वायुमण्डल को कैच नहीं कर सकते हो? यह कैचिंग पॉवर प्रत्यक्ष रूप में अनुभव होगी।

- जैसे आजकल दूर के सीन टेलीविजन द्वारा स्पष्ट दिखाई देते हैं, वैसे दिव्य बुद्धि बनने से, सिर्फ एक की याद के शुद्ध संकल्प में स्थित रहने से आप सभी को एक-दूसरे की स्थिति व पुरुषार्थ की गतिविधि स्पष्ट दिखाई देगी। यह साइंस भी कहाँ से निकली? वास्तविक स्थिति और सम्पूर्ण स्टेज को समझाने के लिए एक साधन निकला है। क्योंकि सूक्ष्म शक्ति को जानने के लिए तमोगुणी बुद्धि वालों को कोई स्थूल साधन चाहिए।

- साइंस वाले भी एक में कई चीजें पैदा करते हैं ना? यह कहाँ से सीखा? यहाँ एक-एक में, अनेक प्रकार के फूलों का रस भरना। जो गायन है – तुम्हारी गत-मत तुम्हीं जानो, क्या-से-क्या बना देना, यही गत है ना? एक-एक में सब रस भर देना, सर्व पुष्पों की विशेषताएँ भरना, तभी तो कहा जाता है कि सर्वगुण सम्पन्न, सर्व रसना सम्पन्न, न कि चौदह कला।

- जैसे विनाशकारी आत्मायें विनाश के लिए तड़पती हैं, क्या ऐसे ही आप स्थापना वाले विश्व-कल्याण के लिए तड़पते हैं? ऐसी सेल्फ सर्विस (self service) और विश्व की सर्विस, दोनों के लिए इन्वेंशन (invention) निकालते हो? जैसे वह लोग अभी इन्वेंशन कर रहे हैं कि ऐसे पॉवरफुल (powerful) यंत्र बनायें जो विनाश सहज और शीघ्र

साधनों के विस्तार को सूक्ष्म और शॉर्ट (short) कर रहे हैं। कम-से-कम एक सेकण्ड तक पहुँचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं। जैसे विनाश के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिए ना? तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे।

- जैसे साइंस द्वारा भी स्पेस में चले जाते हैं और धरती के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरती उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा (ब्रह्मा बाबा) स्वतंत्र है और व्यक्त बंधनों से मुक्त है।

- सूक्ष्मवतन में रहते हुए भी अव्यक्त बापदादा भक्तों की पुकार सुनने, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, छिपे हुए बच्चों को खोज निकालने और ब्राह्मण बच्चों के पुरुषार्थ और सेवा में मदद करने का कार्य करते हैं।

- विज्ञान के युग में बाहरी चमक-दमक वाले साधन तो बहुत हैं परन्तु सच्चा रुहानी स्नेह व स्वार्थ रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है। अतएव अब समय लॉफुल का नहीं बल्कि लवफुल (प्रेम स्वरूप) बनने का है।

- जैसे साइंस के यंत्र दूरबीन द्वारा दूर की चीजों को नजदीक में देखते हैं, ऐसे ही याद के नेत्र और फ़रिश्ते की स्टेज द्वारा कोई भी दृश्य

बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देगा अर्थात् अनुभव होगा।

- साइंस का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइंस का जलवा है, लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेंस की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट (divine insight)। इन द्वारा साइलेंस की शक्ति के बहुत वण्डरफुल (wonderful) अनुभव कर सकते हो।

- जैसे साइंस के यंत्रों द्वारा परसेंटेज का मालूम पड़ जाता है ऐसे साइलेंस की शक्ति के द्वारा आत्मा की स्थिति भी समझ में आ जायेगी। इसको कहा जाता है परखने की शक्ति।

- जैसे आजकल साइंस के साधनों द्वारा सब चीजें समीप अनुभव होती जाती हैं, दूर की आवाज टेलीफोन के साधन द्वारा समीप सुनने में आती है, दूरदर्शन (T.V.) द्वारा दूर का दृश्य सामने दिखाई देता है, ऐसे ही साइलेंस की स्टेज द्वारा कितनी भी दूर रहती हुई आत्मा को संदेश पहुँचा सकते हो?

- जब साइंस के साधन धरती पर बैठे हुए, स्पेस (space) में गये हुए यंत्र को कण्ट्रोल कर सकते हैं, जैसे चाहें, जहाँ चाहें, वहाँ मोड़ सकते हैं तो साइलेंस के शक्ति स्वरूप इस साकार सृष्टि में श्रेष्ठ संकल्प के आधार से, जो सेवा चाहें, जिस आत्मा की सेवा करना चाहें, वो नहीं कर सकते?

- जैसे विज्ञान के यंत्रों द्वारा दूर के दृश्य का सम्मुख अनुभव करते हो, वैसे साइलेंस की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो सामने का अनुभव आप भी करेंगे और अन्य आत्माएँ भी करेंगी। इसको ही योगबल कहा

का रचता है साइलेंस। साइलेंस की शक्ति से ही साइंस निकली है। रचता तो शक्तिशाली (powerful) है ना। निमित्त बनी हुई आत्माएँ विशेष इस समय किस स्थिति में स्थित हैं, साक्षात्कारमूर्त व वरदानीमूर्त? जो भी खज़ाने हैं उनको बाप से शक्ति लेते, स्वयं की शक्ति द्वारा, सर्व को संकल्प द्वारा, वायब्रेशन द्वारा लाइट-माइट का अनुभव करायें, यही वरदान है।

- जैसे साइंस के साधन हैं तो गर्मी होते हुए भी गर्मी नहीं है। ऐसे ही जो निश्चय बुद्धि होगा, उसको माया के तूफान आयेगे लेकिन उसके लिए बड़ी बात नहीं होगी। वह सदा स्वयं को कलियुगी पतित विकारी आकर्षण से किनारा किया हुआ अर्थत् परे महसूस करेंगे। कोई भी कलियुगी आकर्षण उसे खींच नहीं सकता। (जैसे कि साइंस के द्वारा धरती के आकर्षण से परे हो जाते, स्पेस (spacke) में चले जाते अर्थात् दूर चले जाते।)

- एक तरफ सृष्टि परिवर्तन करने के स्थूल साधन खोज (invention) करने के निमित्त बनी हुई आत्माएँ, वैज्ञानिक लोग अपनी इन्वेंशन की महीनता (refineness) में लगे हुए हैं। वैज्ञानिक लगन में, समय और प्रकृति के तत्वों पर विजय प्राप्त करने की, सर्व तत्वों को अपने वशीभूत करने की इच्छा में लगे हुए हैं। हर वस्तु को रिफाइन करने में वे अपनी विजय समझते हैं। साथ-साथ विज्ञानी आत्माएँ, आने वाले राज्य में सर्व सुखों के साधन आप राजयोगी आत्माओं को प्राप्त हों, ऐसे साधन न जानते हुए भी बनाने में खूब व्यस्त हैं अर्थात् आप होवनहार देवताओं के लिए सतोप्रधान श्रेष्ठ साधनों की इन्वेंशन करने में, आपकी

जाता है। लेकिन जैसे साइंस के साधन का यंत्र भी तब काम करेगा जिसका सम्बन्ध (connection) मेन स्टेशन से होगा। इसी प्रकार साइलेंस की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जबकि बापदादा से निरन्तर सीधा सम्बन्ध (clear connection) होगा। वहाँ सिर्फ जोड़ (connection) होता है लेकिन यहाँ कनेक्शन अर्थात् रिलेशन।

- जो अच्छी क्वालिटी का रत्न होता है, उस एक रत्न में एक रंग का होते हुए भी सब रंग दिखाई देंगे। वह है साइंस का हिसाब और यहाँ है साइलेंस द्वारा सर्व प्राप्तियों का अनुभव, जैसे वर्षा के बाद इन्द्रधनुष दिखाई देता है।

- आजकल के जमाने में दूरदेशी बनने का अभ्यास करना होगा। साइंस के साधन भी दूर से परखने का प्रयत्न करते हैं। पहले था तूफान आना और उससे बचाव करना लेकिन अभी ऐसे नहीं है। अभी तो तूफान आ रहा है, उसको जान करके भगाने का प्रयत्न करते हैं। जब साइंस भी आगे बढ़ रही है तो साइलेंस की शक्ति कितनी आगे चाहिए। दूर से भगाने के लिए सदैव त्रिकालदर्शीपन की स्थिति में स्थित रहो।

- जैसे साइलेंस वाले कोई-न-कोई खोज (invention) करने में बिज़ी रहते हैं इसी प्रकार से जो प्वाइंट चल चुकी है उसकी गुह्यता में नये रूप की इन्वेंशन करने के लिए अमृतवेले लक्ष्य लेकर बैठेंगे तो टच होगा। नई-नई इन्वेंशन निकलेंगी जिससे औरों को भी नवीनता का अनुभव होगा।

- वहाँ है साइंस का विमान और आपका है साइलेंस का। साइंस

● आप सब विश्व-कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक हो। कल्याणकारी विश्व की वृत्ति व वायब्रेशन द्वारा व अपने स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा कैसे सेवा करते हैं – उसकी चेकिंग करने बहुत आयेंगे। आज की साइंस द्वारा साइलेंस शक्ति का नाम बाला होगा। योग द्वारा शक्तियाँ कौन-सी और कहाँ तक फैलती हैं, उनकी विधि और गति क्या होती है, यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। ऐसे संगठन तैयार हैं? समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो।

● सदा शुभ भावना से सोचो, शुभ बोल बोलो, व्यर्थ को भी शुभ भावना से सुनो। जैसे साइंस के साधन बुरी चीज़ को परिवर्तन कर अच्छा बना देते, रूप परिवर्तन कर देते तो आप सदा शुभचिंतक, सर्व आत्माओं के बोल के भाव को परिवर्तन नहीं कर सकते? सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे।

● जैसे आजकल टी.वी. में चारों ओर एक स्थान का चित्र स्पष्ट दिखाई देता है तो मधुबन भी टी.वी. स्टेशन है। जैसे आजकल साइंस के साधनों द्वारा संकल्पों की गति या मंसा स्थिति को चैक कर सकते हैं, वैसे मधुबन निवासियों के संकल्पों की गति या मानसिक स्थिति चारों ओर फैलती है। इसलिए हर संकल्प पर भी अटेन्शन हो।

● जैसे आजकल साइंस द्वारा अभी-अभी बीज डाला, अभी-अभी फल मिला। पहले से तीव्रगति है, जो बीज डाला वह प्राप्त हो जाता है। ऐसे ही अपने साइलेंस के बल से सहज और तीव्रगति से प्रत्यक्षता भी देखेंगे। हाई जम्प लगाने वाले हो ना।



ही सेवा में लगे हुए हैं। आप बाप द्वारा सर्व प्राप्तियों की लगन में रहते हैं, वैसे विदेशी आत्माएँ भी अपने साइंस बल द्वारा सृष्टि को स्वर्ग बनाने के इच्छुक हैं। विदेश की विज्ञानी आत्माओं में निरन्तर अपने कार्य के प्रति लगन की विशेषता देखी।

- जैसे साइंस वाले हर चीज़ रिफाइन भी कर रहे हैं और अपनी स्पीड क्विक (तेज) भी कर रहे हैं। सामने आया और अनुभव किया। ऐसी स्पीड जब होगी तब साइंस के ऊपर साइलेंस की विजय देखते हुए सबके मुख से वाह-वाह का आवाज निकलेगा कि साइंस के ऊपर भी इनकी विजय हो गई। जो साइंस नहीं कर सके वह साइलेंस करके दिखावे। साइंस का लक्ष्य भी है सबको शान्तिमय, सुखमय जीवन व्यतीत कराना। तो जो साइंस नहीं कर सके वह करो, तब कहेंगे साइंस के ऊपर विजय। शान्ति वालों को शान्ति और सुख वालों को सुख मिले।

- आजकल साइंस द्वारा हर चीज़ को क्वान्टिटी (मात्रा) के बजाय क्वालिटी (गुण) में ला रहे हैं, छोटा-सा रूप बना रहे हैं, जो रूप छोटा है लेकिन शक्ति अधिक भरी हुई है। जैसे मिठास के विस्तार को सैक्रीन रूप में लाते हैं। विस्तार को सार में ला रहे हैं।

- आवाज बंद होगा, साइलेंस होगा। लेकिन साइलेंस द्वारा ही नगाड़ा बजेगा। जब तक मुख के नगाड़े ज़्यादा हैं, तब तक प्रत्यक्षता नहीं। जब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा तब मुख के नगाड़े बंद हो जायेंगे। गाया हुआ भी है, साइंस के ऊपर साइलेंस की जीत, न कि वाणी की।

जिसमें मेहनत कम हो और अनुभव ज़्यादा हो। चारों ओर के वातावरण, चारों ओर की कमजोर आत्माओं के समाचार प्रमाण ऐसा साधन निकालो। जैसी बीमारी होती है, वैसी दवाई निकाली जाती है, तो चारों ओर के समाचार अनुसार ऐसा साधन निकालो और फिर प्रैक्टिकल करके दिखाओ, अब महारथियों को ऐसा नया साधन इन्वेंट करना चाहिए।

- साइंस वालों का भी वहाँ पार्ट है। यहाँ से सहज मार्ग का बीज डाल कर जायेंगे, यही बीज वहाँ काम में आयेगा। जैसे साइंस के साधन एरोप्लेन जब उड़ते हैं तो पहले चेकिंग होती है, फिर माल भरना होता है। जो भी उसमें चाहिए – जैसे पेट्रोल चाहिए, हवा चाहिए, खाना चाहिए, जो भी चाहिए, उसके बाद धरती को छोड़ना होता है। फिर उड़ना होता है। ब्राह्मण आत्मा रूपी विमान भी अपने स्थान पर तो आ ही गये लेकिन जो डायरेक्शन था, अथवा है, एक सेकण्ड में उड़ने का, उसमें कोई चेकिंग करने में रह गये। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ, इसी चेकिंग में रह गये और कोई ज्ञान के मनन द्वारा स्वयं को शक्तियों से सम्पन्न बनाने में रह गये।

- जैसे साइंस के साधनों द्वारा समय और आवाज कितना भी दूर होते समीप हो गया है ना। जैसे प्लेन द्वारा समय कितना नजदीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ-से-कहाँ पहुँच सकते हो। टेलीफोन द्वारा आवाज कितना समीप हो गया है। टी.वी. द्वारा कोई भी दृश्य व व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। साइंस तो आपकी रचना है। साइंस मुख का आवाज सुनने का साधन बन सकती है लेकिन मन का आवाज नहीं पहुँचा सकती। साइलेंस की शक्ति से हर आत्मा के

● जैसे साइंस के बॉम्बस (Bombs) द्वारा देश-का-देश समाप्त हो, पहला दृश्य कुछ भी नज़र नहीं आता, सब समाप्त हो जाता है। ऐसे इस अन्तिम बाम्ब द्वारा सर्व अल्पकाल के साधना रूपी साधन समाप्त हो एक ही यथार्थ साधन राजयोग द्वारा हर एक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा।

● जैसे विनाशकारी ग्रुप बहुत तीव्रगति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं। बहुत रिफाइन, सेकण्ड में शारीरिक बंधनों से मुक्त होने अर्थात् शारीरिक दुःख से सहज मुक्त होने, अनेक आत्माओं को बचाने के सहज साधन बना रहे हैं। किस आधार से? साइंस की अथॉर्टी से। ऐसे स्थापना के कार्य में निमित्त बने हुए मास्टर ऑलमाइटी अथॉर्टी ग्रुप, आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बंधन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दुःखों से एक सेकण्ड में मुक्त कराने व सदाकाल के लिए सुख-शान्ति के वरदान देने, हर एक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए तैयार हो?

● जैसे आजकल साइंस वाले इन्वेंशन करते हैं, दुःख कम हो और जिस कार्य अर्थ करते हैं वह सफल भी ज़्यादा हो, इसी प्रकार, पुरुषार्थ के साधनों में ऐसा सहज साधन इन्वेंट करो अपने अनुभवों के आधार पर। जैसे सेकण्ड में साइंस का साधन विधि को पाता है, वैसे यह साइलेंस का साधन सेकण्ड में विधि को प्राप्त हो। बाप नालेज देते हैं, लेकिन जैसे साइंस वाले प्रयोगशाला में सब इन्वेंशन प्रैक्टिकल में लाते हैं, ऐसे आप बच्चे भी लाते हैं? प्रयोग में लाने वाले साधन अर्थात् अनुभव में लाने वाले साधन – उनमें से ऐसा कोई सहज साधन सुनाओ,

स्वीच ऑन कर सुनते हो व देखते हो, इतने समय में बापदादा वर्ल्ड का चक्कर लगाते हैं।

- जैसे साइंस वालों ने चन्द्रमा पर जाकर थोड़ी झलक दिखाई तो सबने प्लॉट खरीदने की तैयारी शुरू कर दी तो कम-से-कम साइलेंस की शक्ति वाले नई दुनिया में प्लॉट खरीदने की तैयारी तो करा दो। जैसे साइंस की कोई भी इन्वेंशन पहले प्रयोगशाला में लाकर अनाउंस करते हैं, ऐसे आप लोग भी पहले अपनी एरिया की प्रयोगशाला में प्लैन का प्रयोग करो।

- इंजीनियर अर्थात् प्लानिंग बुद्धि। इंजीनियर्स सदा प्लैन सेट कर कार्य को आगे बढ़ाते हैं। इंजीनियर ग्रुप अर्थात् रूहानी प्लानिंग बुद्धि ग्रुप, ऐसे हो? उस डिपार्टमेंट में अटेन्शन रहता है ना, क्या करें, कैसे करें, कैसे सफल बनायें, किस विधि से करें। यही इंजीनियर्स का काम है ना, तो रूहानी इंजीनियर्स को ईश्वरीय सेवा की विधिपूर्वक वृद्धि कैसे हो, उसका प्लान बनाना पड़े। अभी ऐसा प्लान बनाओ जो कम खर्च और अधिक सफलता वाला हो। जैसे आजकल एक इण्डस्ट्री के द्वारा अनेकों को काम देने का प्लान सोचते हैं तो यहाँ भी प्लान एकनामी का हो। संदेश अनेकों को मिल जाये। यहाँ इंजीनियर्स बहुत चाहिए क्योंकि सतयुग में इंजीनियर्स कम समय में और सुन्दर चीज़ें तैयार करेंगे तो यहाँ से ही संस्कार चाहिए ना।

- आजकल साइंस के युग में हर बात को प्रत्यक्ष प्रमाण व प्रूफ के द्वारा ही समझना चाहते हैं, सुनने-सुनाने से निश्चय नहीं करते। परमात्म-ज्ञान को भी निश्चय करने के लिए प्रत्यक्ष प्रूफ देखने चाहते हैं। प्रत्यक्ष

मन का आवाज उतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशान्ति, दुःख की स्थिति के चित्र ऐसे ही स्पष्ट दिखाई देंगे जैसे टी.वी. द्वारा दृश्य व व्यक्ति को स्पष्ट देखते हो।

- कई बच्चों की मेहनत के भिन्न-भिन्न पोज बापदादा देखते रहते हैं। सारे दिन में अनेक बच्चों के अनेक पोज देखते हैं। ऑटोमैटिक कैमरा है। साइंस वालों ने सब वतन से ही तो कॉपी किया है। कभी वतन में आकर देखना कि क्या-क्या चीजें कहाँ हैं? जो चाहिए वह हाजिर मिलेगा।

- अमेरिका में जो सेंटर खुला है, इसमें भी रहस्य है, विशेष कार्य होना है। विनाश और स्थापना दोनों का साक्षात्कार साथ-साथ होगा। उस तरफ विनाशकारी और इस तरफ पीस मेकर। साइंस और साइलेंस - दोनों शक्तियों का मुकाबला देखेंगे। चारों ओर से अमेरिका को परिवर्तन करने का घेराव डालो। सारे अमेरिका को परिवर्तन कर साइलेंस की शक्ति का नाम बाला करो। सदा याद रखो, हम शान्ति के सागर के बच्चे शान्ति देवा हैं। जो भी सामने आये उसे पीस मेकर बन शान्ति का दान दो।

- जब साइंस की शक्ति से, बिना सीजन के अनाज पैदा कर लेते हैं तो क्या साइलेंस की शक्ति, संगमयुग की फुल सीजन होते हुए भी फल नहीं दे सकती? जैसे वहाँ लोग साधन अपनाते हैं जो असम्भव से सम्भव करके दिखाते हैं तो साधना द्वारा धरती को परिवर्तन करो।

- जितने में आप लोग साइंस के साधनों टी.वी. व रेडियो द्वारा

# सन् 1981 से सन् 1985 तक की अव्यक्त वाणियों से संग्रह



● कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन होती है तो उतना अण्डरग्राउण्ड करते हैं, तो एकान्तवासी बनना ही अण्डर ग्राउण्ड है।

● आजकल की साइंस भी सब साधनों को बहुत सूक्ष्म कर रही है ना। अति छोटा, अति पावरफुल। सूक्ष्मवतन तो है ही पावरफुल वतन। इतनी बिन्दी के अन्दर आप सब देख सकते हो।

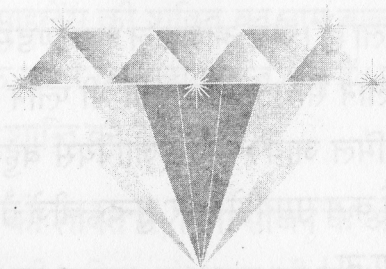
● जैसे आजकल साइंस के अनेक साधन ऐसे हैं – स्विच ऑन करने से चारों ओर का किचड़ा, गंदगी अपने तरफ खींच लेते हैं। चारों ओर जाना नहीं पड़ता लेकिन पावर द्वारा स्वतः ही खिंच जाता है। ऐसे साइलेंस की शक्ति द्वारा इस अटेन्शन के समर्थ स्वरूप द्वारा, अनेक आत्माओं के टेंशन समाप्त कर देंगे अर्थात् वे आत्मायें अनुभव करेंगे कि हमारा टेंशन जो अनेक तरह से, बहुत समय से परेशान कर रहा था वह कैसे समाप्त हो गया, किसने समाप्त किया, इसी अनुभूति द्वारा अटेन्शन जायेगा – शिव-शक्ति कम्बाइण्ड रूप की तरफ। साइंस भी श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ कार्य में सहयोगी है।

● आप लोग तो होशियार तो हो गए ना! साइंस का भी नालेज है, साइलेंस का भी है, देश का भी है तो विदेश का भी है। तो अनुभव भी

प्रूफ है आप सबका जीवन। जब साइंस रेत में भी खेती पैदा कर सकती है, तो क्या साइलेंस वाले धरती को परिवर्तन नहीं कर सकते? संकल्प भी सृष्टि बना देता है।

- बापदादा अनन्य बच्चों के संगठन द्वारा भक्तों को और वैज्ञानिकों को, दोनों को टचिंग कराने की सेवा कराते रहते हैं। उनमें अनन्य भक्त के संस्कार भर रहे हैं जो आधा कल्प भक्ति मार्ग को चलाते रहेंगे और वैज्ञानिकों में परिवर्तन करने और रिफाइन साधन बनाने के। साधन जैसे ही सम्पन्न होंगे तो उनका सुख सम्पूर्ण आत्माएँ लेंगी – ये वैज्ञानिक नहीं ले सकेंगे।

- हम सो फ़रिश्ता का मंत्र पक्का कर लो। साइंस का यंत्र अपना काम शुरू करे और हम सो फ़रिश्ते से हम सो देवता बन दुनिया में अवतरित होंगे।



बना सकते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल स्वरूप तो बिना मजदूर के हो नहीं सकता। तो जैसे स्थूल सहयोग के आधार पर सर्व की अँगुली लगने से हाल तैयार हो गया है। वैसे हाल के साथ वण्डरफुल चाल दिखाने के लिए ऐसा विशेष स्वरूप प्रत्यक्ष में दिखाओ। सिर्फ बुद्धि में संकल्प किया, यह नहीं लेकिन जैसे इंजीनियर के बुद्धि की मदद और मजदूरों के कर्म की मदद से कार्य सम्पन्न हुआ। इसी रीति मन का श्रेष्ठ संकल्प हर कर्म द्वारा दिखाई देता है। तो ऐसे चलने और करने को संकल्प, वाणी, हाथ व पाँव द्वारा संगठित रूप में विचित्र स्वरूप से दिखाने का दृढ़ संकल्प किया है? ऐसी चाल का नक्शा तैयार किया है?

- विशेष बात, साइंस की शक्ति पर साइलेंस की शक्ति की विजय है। तो साइलेंस की शक्ति संगठित रूप में और व्यक्तिगत रूप में कहाँ तक प्राप्त कर ली है, वह देख रहे थे। साइलेंस की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष-फल के रूप में स्व-परिवर्तन, वायुमण्डल-परिवर्तन, वृत्ति परिवर्तन, संस्कार-परिवर्तन कहाँ तक कर सकते हैं व किया है। तो आज सेना के हर एक सैनिक की साइलेंस की शक्ति की प्रयोगशाला चेक की कि कहाँ तक प्रयोग कर सकते हैं।

- शान्ति की शक्ति वायरलेस से भी तेज आपका संकल्प किसी भी आत्मा प्रति पहुँचा सकती है। जैसे साइंस की शक्ति परिवर्तन कर लेती, वृद्धि भी कर लेती है, विनाश भी कर लेती है, रचना भी कर लेती, हाहाकार भी मचा देती और आराम भी दे देती। लेकिन साइलेंस की शक्ति का विशेष यंत्र है - शुभ संकल्प। इस संकल्प के द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो।



एक शक्ति है, सबसे बड़ी शक्ति – अनुभव है। अनुभव सुनाते हो तो सभी खुश होते हैं ना। अनुभव करने वाला स्वयं भी शक्तिशाली बन जाता है। यह भी एक बड़ा शस्त्र है। तो अन्त में साइंस अर्थात् शस्त्रधारी और शास्त्रधारी दोनों ही समझेंगे कि हम क्या हैं और यह क्या हैं!

- साइंस के साधनों से तो बहुत प्रयत्न कर रहे हैं कि एक वृक्ष में वैरायटी फल निकालें, लेकिन ब्रह्मा बाप, वरदान का वृक्ष, सहज योग की पालना से पला हुआ वृक्ष, कितना विचित्र व दिलखुश करने वाला वृक्ष है। एक ही वृक्ष में वैरायटी फल हैं। साइंस वाले जो कोशिश कर रहे हैं उसका फल आपको थोड़ा-बहुत मिल जायेगा। एक ही फल में दो-चार फल के रस का अनुभव होगा। मेहनत यह करेंगे और खायेंगे आप। अभी से खा रहे हो क्या?

- जैसे विज्ञान की शक्ति द्वारा स्पेस में चले जाते हैं तो धरणी का आकर्षण नीचे रह जाता है और वह स्वयं को सबसे ऊपर अनुभव करते और सदा हल्का अनुभव करते हैं। ऐसे साइलेंस की शक्ति द्वारा स्वयं को विकारों की आकर्षण व प्रकृति की आकर्षण, सबसे परे उड़ती हुई स्टेज अर्थात् सदा डबल लाइट रूप अनुभव करेंगे। उड़ने की अनुभूति सब आकर्षण से परे ऊँची है। सर्व बंधनों से मुक्त है। इस स्थिति की अनुभूति होना अर्थात् ऊँची उड़ती कला व उड़ती हुई स्थिति का अनुभव होना।

- जैसे मजदूरों से लेकर बड़े-बड़े इंजीनियर्स, दोनों के सहयोग और संगठन से हाल (ओमशान्ति भवन) की सुन्दर रूपरेखा तैयार हुई है, अगर मजदूर न होते तो इंजीनियर भी क्या करते। वे कागज पर प्लैन

कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है, इसकी रिसर्च करो। रिसर्च की रुचि है ना! अभी यह करना। इतना बड़ा कार्य करना है। ऐसी दुनिया बनायेंगे।

- जैसे विनाश के साधन रिफाइन होने के कारण तीव्र गति से समाप्ति के निमित्त बनेंगे ऐसे आप वरदानी, महादानी आत्मायें अपने कर्मातीत फ़रिश्ते स्वरूप के सम्पूर्ण शक्तिशाली स्वरूप द्वारा सर्व की प्रार्थना के रेस्पाण्ड में मुक्ति का वर्सा दिलायेंगी।

- साइंस वाले तो एक लोक का सैर कर सकते। आप तीनों लोकों का सैर कर सकते हो। सेकण्ड में विश्व-कल्याणकारी स्वरूप बन सारे विश्व को लाइट और माइट दे सकते हो। सिर्फ दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा ऊँची स्थिति में स्थित हो जाओ। जैसे उन्होंने विमान द्वारा हिमालय के ऊपर राख डाली, नदी में राख डाली (इन्द्रा गाँधी की) किसलिए? चारों ओर फैलाने के लिए ना! उन्होंने तो राख डाली, आप दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊँची चोटी की स्थिति में स्थित हो विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। विमान तो शक्तिशाली है ना? सिर्फ यूज करना आना चाहिए।

- जैसे आजकल साइंस का साधन दूरबीन है जो दूर की वस्तु को समीप और स्पष्ट अनुभव कराती हैं, ऐसे यह दिव्य नेत्र भी दिव्य दूरबीन का काम करते हैं। साइंस के साधन इस साकार सृष्टि के सूर्य-चाँद-सितारों तक देख सकते हैं लेकिन यह दिव्य नेत्र तीनों लोकों को, तीनों कालों को देख सकते हैं।

● उड़ते पंछी अर्थात् सर्व बंधनों से मुक्त, जीवन मुक्त। कैनाडा में साइंस भी उड़ने की कला सिखाती है ना! तो कैनाडा निवासी सदा ही उड़ते पंछी हैं।

● जैसे साइंस वाले साइंस के आधार से आकाश के तारा मण्डल का अनुभव कराते हैं। ऐसे यह धरती का चैतन्य तारा मण्डल दूर वालों को भी अनुभव हो। इस शुभ आशा को पूर्ण करने वाले आप सभी निमित्त आत्मायें हो। ऐसे बेहद के प्लैस बनाये हैं ना।

● (एक नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक बाबा के सम्मुख है) शान्ति की शक्ति के अनुभव को भी अनुभव करते हो? क्योंकि शान्ति की शक्ति सारे विश्व को शान्तिमय बनाने वाली है। आप भी शान्ति प्रिय आत्मा हो ना! शान्ति की शक्ति द्वारा साइंस की शक्ति को भी यथार्थ रूप से कार्य में लगाने से विश्व का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हो। साइंस की शक्ति भी आवश्यक है लेकिन सिर्फ सतोप्रधान बुद्धि बनने से इसका यथार्थ रूप से प्रयोग कर सकते हैं। सिर्फ इस नालेज की कमी है कि यथार्थ रीति से इसको प्रयोग में कैसे लगायें। यही साइंस इस नालेज के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनेगी। लेकिन आप, वह नालेज न होने के कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। तो अभी इसी साइंस की शक्ति को साइलेंस की शक्ति के आधार से बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। इसमें भी नोबेल प्राइज लेंगे ना! क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है। तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी श्रेष्ठ आत्मा की नजर से देखेंगे। तो समझा क्या करना है! अभी साइंस और साइलेंस का

नालेज में व उसी नालेज द्वारा सेवा में सदा बिज़ी रहने के अभ्यासी होंगे उतना श्रेष्ठ संकल्प होने के कारण लाइन क्लीयर होगी। व्यर्थ संकल्प ही डिस्टर्बेंस है। जितना व्यर्थ समाप्त हो समर्थ संकल्प चलेंगे उतना संकल्प श्रेष्ठ, भाषा उतना ही स्पष्ट अनुभव करेंगे, जैसे मुख की भाषा से अनुभव करते हो। संकल्प की भाषा सेकण्ड में, मुख की भाषा से बहुत ज़्यादा किसी को भी अनुभव करा सकती है।

- जैसे आजकल के साइंस वाले हर एक प्रश्न का उत्तर कम्प्यूटर से पूछते हैं। क्योंकि समझते हैं मनुष्य की बुद्धि से यह कम्प्यूटर एक्यूरेट है। बनाने वाले से भी बनी हुई चीज़ को एक्यूरेट समझ रहे हैं। लेकिन आप साइलेंस वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्यूटर है। इसलिए क्या-कैसे के बजाए जीवन के कम्प्यूटर से देखो। कैसे और क्या का क्वेश्चन ऐसे में बदल जायेगा। प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त हो जायेंगे।

- साइंस की विद्या (विज्ञान सत्ता), अल्पकाल के राज्य अधिकारी (राज्य सत्ता) व धर्म नेता का अधिकार (धर्म सत्ता), इसी को ही आज की दुनिया में विशेष आत्मायें मानते हैं। लेकिन बापदादा कौन-सी विशेषता देखते हैं? सबसे पहले अपने आपको और बाप को जानने की विशेषता जो आप ब्राह्मण बच्चों में है वह किसी भी नामीग्रामी आत्मा में नहीं है।

- जब साइंस की शक्ति से एक देश से दूसरे देश तक राकेट भेज सकते हैं तो क्या साइलेंस की शक्ति से आप शुभ भावना, कल्याण की भावना से मंसा द्वारा सहयोगी नहीं बन सकते? कोई साकार में वाणी से, कर्म से निमित्त बनेंगे। कोई मंसा सेवा में निमित्त बनेंगे। लेकिन जितना

● इस रुहानी तारामण्डल को साइंस की शक्ति नहीं देख सकती। साइंस की शक्ति वाले इस तारामण्डल को देख सकते, जान सकते हैं। तो आज तारामण्डल का सैर करते भिन्न-भिन्न सितारों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। कैसे हर एक सितारा – ज्ञान सूर्य द्वारा सत्यता की लाइट-माइट ले बाप समान सत्यता की शक्ति सम्पन्न सत्य स्वरूप बने हैं और ज्ञान चन्द्रमा द्वारा शीतलता की शक्ति धारण कर चंद्रमा समान शीतला स्वरूप बने हैं। यह दोनों शक्तियाँ – सत्यता और शीतलता सदा सहज सफलता को प्राप्त कराती हैं।

● साइंस वाले देखो अपनी खोज में इतने व्यस्त हैं जो कुछ और नहीं सूझता। महान आत्मायें देखो प्रभु को पाने की खोज में लगी हुई हैं वा छोटी-सी भ्रान्ति के कारण प्राप्ति से वंचित हैं। आत्मा ही परमात्मा है वा सर्वव्यापी परमात्मा है इस कारण खोज में ही रह गये। प्राप्ति से वंचित रह गये हैं। साइंस वाले भी अभी और आगे है और आगे है, ऐसा करते-करते चंद्रमा में, सितारों में दुनिया बनायेंगे, खोजते-खोजते रह गये हैं।

● जैसे आजकल के साइंस वाले सूक्ष्म वस्तुओं को पावरफुल ग्लास द्वारा देख सकते हैं। साधारण रीति से नहीं देख सकते। ऐसे आप सूक्ष्म परखने की शक्ति द्वारा उन सूक्ष्म बंधनों को देख सकते व महीन बुद्धि द्वारा जान सकते हैं? अगर ऊपर-ऊपर के रूप से देखेंगे तो न देखने व न जानने के कारण वह अपने को बंधमुक्त ही समझते रहते हैं।

● साइंस के साधन जब फेल हो जाते हैं तो यह साइलेंस का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए। जितना-जितना एक बाप और उन्हीं द्वारा सुनाई हुई

# सन् 1986 से सन् 1990 तक की अव्यक्त वाणियों से संग्रह



● जैसे विज्ञान की शक्ति ने सारे विश्व को समाप्त कर सामग्री बहुत शक्तिशाली बनाई है जो थोड़े समय में कार्य समाप्त जाए। विज्ञान की शक्ति ऐसे रिफाइन वस्तु बना रही है। आप ज्ञान की शक्ति वाले ऐसे शक्तिशाली वृत्ति और वायुमण्डल बनाओ जो समय में चारों ओर खुशी की लहर, सृष्टि के श्रेष्ठ भविष्य की लहर बहुत जल्दी-से-जल्दी फैल जाए। आधी दुनिया अभी आधा मरीचक भय के मौत की शय्या पर सोई हुई है। उसको खुशी की लहर आक्सीजन दो। समझा क्या करना है? अभी गति को तीव्र बनाना।

● जैसे विनाश की शक्ति वहाँ श्रेष्ठ है ऐसे ही स्थापना की शक्ति का आवाज बुलंद हो। विनाश और स्थापना साथ-साथ दोनों लहराएँ। एक साइंस का झण्डा और एक साइलेंस का। साइंस की शक्ति का प्रभाव और साइलेंस की शक्ति का प्रभाव, दोनों प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना।

● यह पुरानी देह व देह की पुरानी दुनिया व व्यक्त भाव, व्यक्त भाव – इन सब आकर्षणों से सदा और सहज दूर रहने वाले व्यक्ति जैसे साइंस की शक्ति धरती की आकर्षण से परे कर देती है। साइलेंस की शक्ति इन सब हृदय की आकर्षणों से दूर ले जाती है। कहते हैं – सम्पूर्ण सम्पन्न बाप समान स्थिति।

दिन प्रोग्राम चलता है चाहे 5 दिन, चाहे 6 दिन चलता, इतना ही समय हर ब्राह्मण आत्मा को सेवा का कंगन बंधा हुआ हो कि मुझ आत्मा को निमित्त बन सफलता को लाना है।



हर एक बच्चे के संकल्प की भाषा सदा ही सुनते हैं अर्थात् संकल्प कैच करते हैं। इसके लिए बुद्धि अति सूक्ष्म, स्वच्छ और स्पष्ट आवश्यक है। तब ही बाप की रूह-रूहान के रेसपाण्ड को समझ सकेंगे।

● दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना, यह प्रैक्टिस करो। शान्ति की शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइंस की शक्ति का कितना प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं, लेकिन साइंस की शक्ति निकली किससे? साइलेंस की शक्ति से ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है तो साइलेंस की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। तो बाप के दिव्य सम्बन्ध द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो तो फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जिसका जमा का खाता नहीं होता उसको समय पर धोखा मिलता है। ऐसे ही साइलेंस की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्त्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे। फिर दुःख होगा, पश्चाताप होगा। इसलिए अभी से बाप के द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो।

● शुभभावना – कहाँ दूर बैठी हुई किसी आत्मा को भी फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बन सकती है। जैसे साइंस के साधन दूर बैठी आत्माओं से समीप का सम्बन्ध कराने के निमित्त बन जाते हैं, आपकी आवाज पहुँच जाती है, आपका संदेश पहुँच जाता है, दृश्य पहुँच जाता है। तो जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए समीपता का फल दे सकती है तो आपके साइलेंस की शक्तिशाली शुभभावना दूर बैठे भी आत्माओं को फल नहीं दे सकेगी? लेकिन इसका आधार है – शान्ति।



● कर्मातीत स्थिति वाला देह का मालिक होने के कारण कर्म भोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी है। बीच-बीच में अशरीरी स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है। जैसे साइंस के साधन द्वारा बेहोश कर देते हैं तो दर्द होते भी भूल जाते हैं। दर्द फील नहीं करते हैं क्योंकि दवाई का नशा होता है तो कर्मातीत अवस्था वाले को अशरीरी बनने के अभ्यासी होने के कारण बीच-बीच में यह रुहानी इंजेक्शन लग जाता है। इस कारण सूली से काँटा अनुभव होता है।

● हर एक बच्चे की याद और सेवा का रिकार्ड बापदादा के पास हर समय का रहता है। जैसे आपकी दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइंस के साधनों से भी रिफाइन साधन हैं जो स्वतः ही कार्य करते रहते हैं। जैसे साइंस के साधन जो भी कार्य करते, वह लाइट के आधार से करते। सूक्ष्म वतन तो है ही लाइट का। साकार वतन के लाइट के साधन फिर भी प्रकृति के साधन हैं और प्रकृति रूप बदलती है – सतो, रजो, तमो में परिवर्तन होती है। इस समय तो है ही तमोगुणी प्रकृति, इसलिए यह साधन आज चलेंगे, कल नहीं। लेकिन अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए यह परिवर्तन में नहीं आते। जब चाहो, जैसे चाहो सूक्ष्म साधन सदा ही अपना कार्य करते रहते हैं।

● संकल्प की शक्ति, वाणी की शक्ति से अति सूक्ष्म होने के कारण अति तीव्र गति से चलती भी है और पहुँचती भी है। रूह-रूहान की भाषा है ही संकल्प की भाषा। साइंस वाले आवाज को कैच करते हैं लेकिन संकल्प को कैच करने के लिए सूक्ष्म साधन चाहिए। बापदादा

और दिव्य बुद्धि से पहुँच जाते हो। जब चाहो तब लौट आते हो। साइंस वालों को तो मौसम भी देखना पड़ता है। आपको यह भी नहीं देखना पड़ता कि आज बादल हैं, नहीं जा सकेंगे। आजकल देखो, बादल तो क्या थोड़ी-सी फागी भी होगी है तो भी प्लेन नहीं जा सकता और आपका विमान एवररेडी है या कभी फागी आती है? माया कभी रुकावट तो नहीं डालती है? मास्टर सर्वशक्तिवान को कोई रोक नहीं सकता। जहाँ सर्वशक्तियाँ हैं, वहाँ कौन रोकेगा। कोई भी शक्ति की कमी होती है तो समय पर धोखा मिल सकता है।

- यह दिव्य बुद्धि का वाहन अन्य किसी भी वाहन से तीव्र गति वाला है। दिव्य बुद्धि को बल भी कहा जाता है। क्योंकि बुद्धिबल द्वारा ही बाप से सर्व शक्तियाँ कैच कर सकते हो। इसलिए बुद्धिबल कहा जाता है। साइंस बल कितनी हद की कमाल दिखाते हैं। कई बातें जो आज मानव को असम्भव लगती हैं, वह सम्भव कर दिखाते हैं। लेकिन यह विनाशी बल है, साइंस बुद्धिबल है, लेकिन दिव्य बुद्धिबल नहीं है, संसारी बुद्धि है। इसलिए इस संसार के प्रति ही सोच सकते हैं और कर सकते हैं। दिव्य बुद्धिबल मास्टर सर्वशक्तिवान बनाता है, परमात्म-पहचान, परमात्म-मिलन, परमात्म-प्राप्ति की अनुभूति कराता है। दिव्य बुद्धि जो चाहो, जैसे चाहो, असम्भव को सम्भव करने वाली है। दिव्य बुद्धि द्वारा हर कर्म में परमात्म-प्यूर (पवित्र) टचिंग अनुभव कर हर कर्म में सफलता का अनुभव कर सकते हैं। दिव्य बुद्धि कोई भी माया के वार को हार खिला सकती है।

- एक हैं साइंस के साधन और ब्राह्मण जीवन में हैं ज्ञान के साधन।

अपने अन्दर इतनी शान्ति की शक्ति जमा हो। साइलेंस की शक्ति यह अलौकिक अनुभव करा सकती है, आगे चलकर यह प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करते रहेंगे।

- शुभभावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। जितने भी साइंस के साधन हैं उनसे अधिक तीव्रगति संकल्प की है। किसी आत्मा के प्रति व बेहद विश्व की आत्मों के प्रति शुभभावना रखते हो अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करते हो कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। आपका संकल्प व भावना उत्पन्न होना और उस आत्मा को अनुभूति होगी कि मुझ आत्मा को कोई विशेष सहयोग से शक्ति व शान्ति मिल रही है। ऐसे मास्टर विश्व-कल्याणकारी आत्माओं की सूक्ष्म सेवा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। समय भी कम और साधन भी कम, सम्पत्ति भी कम लगेगी। इसके लिए मन और बुद्धि सदा फ्री चाहिए। सूक्ष्म सेवा तीव्र गति से चले, इसके लिए विशेष अटेंशन - एकान्त और एकाग्रता।

- साइलेंस की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? साइलेंस की शक्ति सेकण्ड में अपने स्वीट होम, शान्तिधाम में पहुँचा देती है। साइंस वाले तो और फास्ट गति वाले यंत्र निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन आपका यंत्र कितनी तीव्र गति का है। सोचा और पहुँचा। ऐसा यंत्र साइंस में है जो इतना दूर बिना खर्च के पहुँच जाए? वो तो एक-एक यंत्र बनाने में कितना समय और कितनी एनर्जी लगाते हैं, आपने क्या किया? बिना खर्च मिल गया। यह संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट है। आपको शुभ संकल्प का यंत्र मिला है, दिव्य बुद्धि मिली है। शुद्ध मन

# सन् 1991 से सन् 1995 तक की अव्यक्त वाणियों से संग्रह



● जैसे साइंस की शक्ति द्वारा कई चीजें इशारे से ऑटोमेटिक चलती हैं, चलाना नहीं पड़ता, चाहे लाइट द्वारा, चाहे वायब्रेशन की शक्ति द्वारा स्विच ऑन किया और चलता रहता है। लेकिन साइंस की शक्ति विनाशी होने के कारण अल्पकाल के लिए चलती है। अविनाशी बाप के साइलेंस की शक्ति द्वारा इस ब्राह्मण जीवन में सदा और स्वतः ही सहज चलते रहते हैं।

● आजकल के साइंस के साधनों से जो वेस्ट अर्थात् खराब माल होता है, उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज़ बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेंस की शक्ति से - चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी।

● आजकल साइंस की शक्ति, साधनों द्वारा कितनी तेज कार्य कर रही है। जितने समय में और जितना यथार्थ रीति से चैतन्य मनुष्य कर सकता है उतना साइंस का साधन कम्प्यूटर कितना जल्दी काम करता है। चैतन्य मनुष्य को भी करेक्शन करता है। तो जब साइंस का साधन कार्य-शक्ति को तीव्र बना सकता है, कई ऐसे इन्वेंशन निकले

तो ब्रह्माचारी आत्मा साइंस के साधन व ज्ञान के साधन के आधार पर सदा सुखी नहीं होते। लेकिन साधनों के आधार को भी अपनी साधना के स्वरूप में कार्य में लाते। साधनों को आधार नहीं बनाते लेकिन अपनी साधना के आधार से साधनों को कार्य में लाते। साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरंतर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। मन-बुद्धि, दिल और शरीर चारों ही साथ-साथ बाप के साथ समान स्थिति में रहें - यह है यथार्थ साधना।



जो भी साइंस ने प्रयोग के साधन दिये हैं, उन सब साधनों का आधार क्या है? साइंस के प्रयोग का आधार क्या है? मैजारिटी देखेंगे, लाइट है। लाइट द्वारा ही प्रयोग होता है। अगर कम्प्यूटर भी चलता है तो किसके आधार से? कम्प्यूटर माइट है लेकिन आधार लाइट है ना। तो आपके साइलेंस की शक्ति का भी आधार क्या है? लाइट है ना। जब वे प्रकृति की लाइट द्वारा अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाते हैं तो आपकी अविनाशी परमात्म-लाइट, आत्मिक-लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो उससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता? आपके पास स्थिति भी लाइट है और मूल स्वरूप भी लाइट है। जब भी कोई प्रयोग करना चाहते हो तो पहले अपने मूल आधार को चेक करो। जैसे कोई भी साइंस के साधन को यूज करेंगे तो पहले चेक करेंगे ना कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले यह चेक करो कि मूल आधार – आत्मिक-शक्ति, परमात्म-शक्ति व लाइट स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो और सबसे पहले इस अभ्यास को शक्तिशाली बनाने के लिए पहले अपने ऊपर प्रयोग करके देखो।

● जैसे साइंस का प्रयोग दिन-प्रतिदिन थोड़े समय में प्रत्यक्ष रूप का अनुभव कराने में आगे बढ़ रहा है। साइंस वालों का भी यही लक्ष्य है। ऐसे जो भी लक्ष्य रखा उसमें समय को भी चेक करो और सफलता को भी चेक करो। जब स्व के प्रति प्रयोग में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के लिए प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति

भी हैं और निकल भी रहे हैं, तो ब्राह्मण आत्माओं की साइलेंस की शक्ति कितना तीव्र कार्य यथार्थ सफल कर सकती है? सेकण्ड में निर्णय हो, सेकण्ड में कार्य को प्रैक्टिकल में सफल करो। सोचना और कर ! इसका बैलेंस चाहिए। जब साइंस के साधन तीव्र गति के हो रहे हैं, एक सेकण्ड में क्या नहीं कर लेते हैं। विनाश के साधन तीव्र गति के तरफ जा रहे हैं तो स्थापना के साइलेंस के शक्तिशाली साधन क्या नहीं कर सकते।

- (दादी जानकी जी ने मैक्सिको की कॉन्फ्रेंस का समाचार बापदादा को सुनाया।) अच्छा है, साइंस वाले तो काम में लगे ही हैं। प्रयोग करने में साइंस वाले होशियार होते हैं ना। तो एक भी अच्छी तरह से योगी और प्रयोगी बन गया तो बड़े-से-बड़े माइक का काम करेगा।

- दुनिया में और अनेक प्रकार के बल हैं – साइंस का भी बल है, राज्य का भी बल है, भक्ति का भी बल है लेकिन आपमें क्या बल है? ज्ञान बल और योग बल। ये सबसे श्रेष्ठ बल हैं। तो योगबल में जो बल होता है, शक्ति होती है वो किसलिए होती है? विजय प्राप्त करने के लिए। जैसे साइंस का बल है तो साइंसबल अंधकार के ऊपर विजय प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे योगबल सदा के लिए माया पर विजयी बनाता है।

- बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि ज्ञानी-योगी आत्मायें बने हो, अब ज्ञान और योग को, शक्ति को प्रयोग में लाने वाले प्रयोगशाली आत्मायें बनो। जैसे साइंस की शक्ति का प्रयोग दिखाई देता है ना, लेकिन साइंस की शक्ति के प्रयोग का भी मूल आधार क्या है? आज

लाइट यह कार्य नहीं कर सकती? जो चाहें वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकें। अभी आवश्यकता है, एकाग्रता की शक्ति की, मन-बुद्धि दोनों ही एकाग्र हों तब कैचिंग पावर होगी। बहुत अनुभव करेंगे। संकल्प किया – निःस्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा। साइलेंस की शक्ति के आगे यह साइंस झुकेगी। अभी जो समझते हैं साइंस में भी कुछ मिसिंग है जो भरनी चाहिए। इसलिए बापदादा अण्डरलाइन कराते हैं, अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा, यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसलिए संकल्प शक्ति के ऊपर अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्त्व क्यों है? प्रयोग में आती है इसलिए समझते हैं, हाँ साइंस बहुत अच्छा काम करती है। तो साइलेंस की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है – मन की कण्ट्रोलिंग पावर जिससे मनोबल बढ़ता है। मनोबल की बड़ी महिमा है। यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं। आप विधिपूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे। जो वरदान बन जायेंगे। आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्धि हो जायेगा।

- यह सब साइंस बना ही आप लोगों के लिए है। देखो स्थापना के सौ वर्ष पहले से ही यह सब धीरे-धीरे निकला है। तो किसके लिए निकला? सुख तो ब्राह्मणों को ही मिलता है ना।

- जैसे साइंस का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहे हैं ऐसे साइंस का भी रचयिता साइलेंस बल है। साइलेंस बल को अभी प्रत्यक्ष रूप में दिखाने का समय है। साइलेंस बल का वायब्रेशन तीव्रगति से



● वैज्ञानिकों को बहुत अच्छा अनुभव है। जैसे साइंस दिन-प्रतिदिन अति सूक्ष्म, महीन होती जाती है, ऐसे आप साइंस और साइलेंस दोनों के अनुभवी हो। तो अपने हमजिन्स को साइलेंस का महत्त्व सुनाओ। उनका भी कल्याण करो। साइलेंस भी एक विज्ञान है। साइलेंस का विज्ञान क्या है, उनकी इन्हों को पहचान दो। साइलेंस के विज्ञान से क्या-क्या होता है, यह जानने से साइंस भी रिफाइन कर सकेंगे। क्योंकि हमारी नई दुनिया में भी विज्ञान तो काम में आयेगा ना। लेकिन रिफाइन रूप में होगा। जिसके कारण नुकसान का नाम-निशान नहीं होगा। तो जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक हैं उन्हों को साइलेंस का ज्ञान दो। तो फिर अपनी नई दुनिया में रिफाइन विज्ञान का कार्य करने में मददगार बनेंगे।

● इंजीनियर्स क्या करेंगे? कुछ-न-कुछ नया बनाते रहते हैं। तो सतयुग में नई दुनिया बनाने के लिए औरों को तैयार करो। आप तो राजा बनेंगे ना। आप थोड़े ही मकान बनाने वाले बनेंगे। तो ऐसी आत्मायें तैयार करो जो नई दुनिया की रचना बहुत अच्छे-से-अच्छी कर सकें। ऐसी इंजीनियरिंग करें जो सारे कल्प में ऐसी चीज़ें नहीं हों। चाहे द्वापर-कलियुग में बढ़िया-बढ़िया चीज़ें बनाते हैं लेकिन नई दुनिया में ऐसी आश्चर्यजनक चीज़ें हों जो आजकल की श्रेष्ठ चीज़ों से सर्वश्रेष्ठ हों। ऐसे इंजीनियर्स को तैयार करो।

● यह वायरलेस, टेलीफोन जैसे कार्य करता है वैसे यह शुद्ध संकल्प का खज़ाना, ऐसे ही कार्य करेगा। लंदन में बैठे हुए कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा जैसे यह वायरलेस या टेलीफोन, टी.वी.। क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्मा की

# सन् 2001 से सन् 2006 तक की अव्यक्त वाणियों से संग्रह



● समय की पुकार अब तीव्रगति और बेहद की है। छोटी-सी रिहर्सल देखी-सुनी। एक ही साथ बेहद का नक्शा देखा ना! चिल्लाना भी बेहद, मरना भी बेहद, मरने वालों के साथ-साथ जीने वाले भी अपने जीवन में परेशानी से मर रहे हैं। ऐसे समय पर आप स्वराज्य अधिकारी आत्माओं का क्या कार्य है? चेक करो। जैसे स्थूल साधनों के लिए बताते हैं कि भूकम्प आवे तो यह करना, तूफान आवे तो यह करना, आग लगे तो यह करना, वैसे आप श्रेष्ठ आत्माओं के पास जो साधन हैं – सर्वशक्तियाँ, योग का बल, स्नेह का चुम्बक। यह सब साधन समय के लिए तैयार हैं? सर्वशक्तियाँ हैं? तो एवररेडी बनना, सिर्फ अपने अशरीरी बनने के लिए नहीं। वह तो बनना ही है। लेकिन जो साधन स्वराज्य अधिकार से प्राप्त हुए हैं, परमात्मा के वर्से में मिले हैं वह सब अधिकार एवररेडी हैं? ऐसे तो नहीं, जैसे समाचारों में सुनते हो कि जो मशीनरी इस समय चाहिए वह फारेन (विदेश) से आने के बाद कार्य में लगायी गई। तो साधन एवररेडी नहीं रहे ना! कितना नुकसान हुआ।

तो हे विश्व-कल्याणकारी, विश्व-परिवर्तक आत्माएँ, सर्व साधन एवररेडी हैं? सेकण्ड से भी कम समय में निर्णय शक्ति हाज़िर हो जाए, कहे स्वराज्य अधिकारी, हाज़िर! ऐसे आर्डर में है? या एक मिनट अपने में लाने में लगेगा। फिर दूसरे को दे सकेंगे? इसके लिए यह सोचो कि समय आने पर इमर्ज हो जायेंगी लेकिन सारे दिन में स्वयं प्रति भिन्न-

फैलाने का साधन है – मन-बुद्धि की एकाग्रता। यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाना चाहिए। एकाग्रता की शक्ति से ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण वायुमण्डल नहीं बन सकता।

● क्या जब साइंस की शक्ति इतनी हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेंस की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं कर सकती? जब करना ही है तो उस बात पर विशेष अटेन्शन दो।

● जैसे साइंस प्रत्यक्ष अनुभव कराती है। मानो गर्मी है तो साइंस के साधन ठण्डी का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं। ऐसे रिसर्च वालों को ऐसे विशेष प्लान बनाने चाहिए कि हर एक जो बाप की या आत्मा की विशेषतायें हैं – ज्ञान स्वरूप, शान्त स्वरूप... इस एक-एक विशेषता का प्रैक्टिकल में अनुभव क्या होता है, वह ऐसा सहज साधन निकालो! जो भी अनुभव करने चाहें – चाहे थोड़े समय के लिए भी अनुभव कर सकें कि शान्ति इसको कहते हैं, शक्ति की अनुभूति इसको कहते हैं। एक सेकण्ड, दो सेकण्ड भी अनुभव कराने की विधि निकालो। तो एक सेकण्ड भी अगर किसी को अनुभव हो गया तो वह अनुभव आकर्षित करता है। ऐसी कोई इन्वेंशन निकालो। आपके सामने आवे और जिस विशेषता का अनुभव करना चाहे वह कर सके।



फिर कहेंगे जो चाहते हैं वह हो गया, सहज।

- यह तो कुछ भी नहीं, बहुत नाजुक समय आना ही है। ऐसे समय पर आप उड़ती कला द्वारा फ़रिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाते, जिसको शान्ति चाहिए, जिसको खुशी चाहिए, जिसको सन्तुष्टता चाहिए, फ़रिश्ते रूप में सकाश देने का चक्कर लगायेंगे और वह अनुभव करेंगे। अनुभव करेंगे, फ़रिश्तों द्वारा शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई, खुशी मिल गई। ऐसे अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा और चारों ओर चक्कर लगाते रावको शक्तियाँ देंगे। अभी राज्य अधिकारी, अकाल तख़्त पर बैठे ग़हो, नीचे नहीं आओ, फिर देखो गवर्मेन्ट को भी साक्षात्कार होगा – यही हैं, यही हैं, यही हैं।

- जो देश-विदेश में इसी याद में बैठे हैं – बापदादा मधुबन में आ गये। अपने-अपने दूरदेशी दृष्टि, दूरबीन से देख रहे हैं। तो वह भी अभी बाबा के सामने आ रहे हैं कि कैसे दूर बैठे भी मन से मधुबन में हैं। आपके इस साकार वतन के यह साधन तो नीचे-ऊपर हो सकते हैं लेकिन यह आध्यात्मिक दूर दृष्टि, दूरदेशी दृष्टि कभी खराब नहीं हो सकती।

- आज साइंस के साधन से दूर-दूर में भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं। (आज बापदादा की मुरली भारत में टी.वी. पर तथा विदेश में इण्टरनेट द्वारा सभी सुन व देख रहे हैं) तो उन सभी बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं।

- आप ब्राह्मणों के एक श्रेष्ठ संकल्प में, शुभ संकल्प में इतनी

भिन्न शक्तियाँ योज करके देखो। सबसे पहला अभ्यास स्वराज्य अधिकार सारे दिन में कहाँ तक कार्य में लगता है? मैं तो हूँ ही आत्मा मालिक, यह नहीं। मालिक होकर आर्डर करो और चेक करो कि हर कर्मेन्द्रियाँ मुझ राजा के लव और लॉ में चलते हैं? आर्डर करें - 'मनमनाभव' और मन जाये निगेटिव और वेस्ट थॉट्स में - क्या यह लव और लॉ रहा? आर्डर करें मधुरता स्वरूप बनना है और समस्या अनुसार, परिस्थिति अनुसार क्रोध का महारूप नहीं लेकिन सूक्ष्म रूप में भी आवेश व चिड़चिड़ापन आ रहा है - क्या यह आर्डर है? आर्डर करें हमें निर्मान बनना है और वायुमण्डल अनुसार सोचो कहाँ तक दब कर चलेंगे, कुछ तो दिखाना चाहिए। क्या मुझे ही दबना है? मुझे ही मरना है? मुझे ही बदलना है? - क्या यह लव और आर्डर है? इसलिए विश्व के ऊपर, चिल्लाने वाले दुःखी आत्माओं के ऊपर रहम करने के पहले अपने ऊपर रहम करो। अपना अधिकार सम्भालो। आगे चल आपको चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मंसा द्वारा वायुमण्डल बनाने का बहुत कार्य करना है। अभी समय प्रमाण तीव्र गति और बेहद सेवा की आवश्यकता है। तो अभी पहले हर दिन चेक करो 'स्वराज्य अधिकार' कहाँ तक रहा? आत्मा मालिक होकर कर्मेन्द्रियों को चलाये। स्मृति स्वरूप रहे कि मैं मालिक इन साथियों से, सहयोगियों से कार्य करा रहा हूँ। स्वरूप में नशा रहे तो स्वतः ही यह सब कर्मेन्द्रियाँ आपके आगे जी हाज़िर, जी हज़ूर करेंगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आज व्यर्थ संकल्प को मिटाओ, आज संस्कार को मिटाओ, आज निर्णय शक्ति को प्रगट करो। एक धक से सब कर्मेन्द्रियाँ और मन-बुद्धि-संस्कार जो आप चाहते हैं, वह करेंगी। अभी कहते हैं ना - बाबा, चाहते तो यह हैं लेकिन अभी इतना नहीं हुआ है...

रहनी ही नहीं है। जैसे भारत सबसे साहूकार था, वैसे ही अभी बनना ही है। तो आपका यह संकल्प पूरा होना है। कोई आत्मा सम्पर्क में आये तो आप सिर्फ मैसेंजर बन, यही मैसेज दो कि साइलेंस और साइंस दोनों का बैलेंस कैसे रहे। अभी यही मैसेज देना है। भारत की आध्यात्मिक नालेज सभी को सुख-शान्ति का वरदान देगी। साइंस और साइलेंस का बैलेंस भारत को स्वर्णिम बनायेगा। फ़ालो ब्रह्मा बाबा।

तो बापदादा देख रहे थे कि सबसे तीव्रगति की सेवा है – वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो लेकिन एक बात वृत्ति द्वारा सेवा करने में रुकावट डाल रही है। जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में किसी भी आत्मा के प्रति वायब्रेशन नेगेटिव हैं तो विश्व-कल्याण की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन नहीं फैला सकेंगे – यह पक्का समझ लो। कितनी भी सेवा कर लो, रोज आठ-आठ भाषण कर लो, योग-शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना नेगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो। अच्छा, वह खराब है, बहुत गलतियाँ करता है, बहुतों को दुःख देता है, तो क्या आप उसके दुःख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में मददगार नहीं बन सकते! दुःख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो।

● इंजीनियर्स ने मीटिंग की है, बहुत अच्छा। इंजीनियर्स का तो काम ही है प्लैन बनाना। तो तीव्र पुरुषार्थ का कोई प्लैन बनाना। तो तीव्र पुरुषार्थ का कोई प्लैन बनाया कि सिर्फ सेवा का बनाया? इंजीनियर्स को

शक्ति है जो आत्माओं को बहुत सहयोग दे सकते हो। संकल्प शक्ति का महत्त्व अभी और जितना चाहो उतना बढ़ा सकते हो। जब साइंस के साधन राकेट को दूर बैठे जहाँ चाहें, जब चाहें, जिस स्थान पर पहुँचाना चाहें एक सेकण्ड में पहुँचा सकते हैं। आपके शुभ, श्रेष्ठ संकल्प के आगे यह राकेट क्या है? रिफाइन विधि से कार्य में लगाके देखो, आपके विधि की सिद्धि बहुत श्रेष्ठ है। लेकिन अभी अन्तर्मुखता की भट्टी में बैठो।

● जो दूर-से-दूर बैठे देख रहे हैं, चाहे भारत में, चाहे फारेन में सुन रहे हैं, देख रहे हैं, उन सभी दूर बैठे दिल के समीप बच्चों को बापदादा पहले याद-प्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं, कोई का क्या टाइम होता है, कोई का क्या टाइम होता है, फिर रात को दिन बना के, दिन को रात बना कर बैठ रहे हैं। यह है बच्चों और बाप का प्यार और बापदादा विज्ञानी बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि आप बच्चों के लिए साइंस के साधन निकाले हैं। इसलिए उन बच्चों को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। आपके लिए ही ये साधन 100 वर्ष के अन्दर-अन्दर निकले हैं। तो कमाल है ना साइंस वालों की, थैंक्स है ना! अच्छा!

**डॉ. अब्दुल कलाम, डॉ. पिल्लई, डॉ. सेल्वामूर्ति**

**भारत के इन वैज्ञानिकों प्रति**

बापदादा आप सबका भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। आप आत्माओं द्वारा भी विशेष सेवा होनी है। कौन-सी सेवा करेंगे? (30 प्रतिशत लोग गरीब हैं, उस गरीबी को दूर करने का संकल्प आ रहा है) हो जायेगी। आपका जो संकल्प है वह अभी समय आने वाला ही है, यह गरीबी

स्थिति द्वारा अनुभूति कराओ। भाषण के समय आपके बोल से, आपके मस्तक से, नयनों से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म-प्यार की बहुत अच्छी अनुभूति हो रही थी। जैसे भाषण की रिजल्ट में कहते – बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छी बातें सुनाई, ऐसे ही आत्म-स्वरूप की अनुभूति का भी वर्णन करें। मनुष्य आत्माओं को वायब्रेशन पहुँचे, वायुमण्डल बने। जब साइंस के साधन ठण्डा वातावरण कर सकते हैं, सबको महसूस होता है, बहुत ठण्डाई अच्छी आ रही है। गर्म वायुमण्डल अनुभव करा सकते हैं। साइंस सर्दी में गर्मी का अनुभव करा सकती है, गर्मी में सर्दी का अनुभव करा सकती है तो आपकी साइलेंस क्या प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप वायुमण्डल का अनुभव नहीं करा सकती? यह रिसर्च करो। सिर्फ अच्छा-अच्छा किया लेकिन अच्छा बन जायें, तब समाप्ति के समय को समाप्त कर अपना राज्य लायेंगे। अभी मसीफुल बनो। इससे बापदादा गैरण्टी दे रहे हैं कि आपके पास क्वालिटी की वर्षा हो जायेगी। वारिस क्वालिटी की वारिश पड़ेगी।

● साइंटिस्ट और इंजीनियर्स, आप लोगों ने तो बहुत प्लैन बनाये होंगे। जैसे आजकल साइंस बहुत फास्ट जा रही है तो आप भी ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ जो जल्दी-से-जल्दी स्थापना की बिल्डिंग तैयार हो जाए, तब तो विनाश होगा ना। इंजीनियर्स भी कर सकते हैं तो साइंस वाले भी कर सकते हैं। अभी तीव्र गति का कोई प्लैन बनाओ। आपकी एक सेकण्ड की दृष्टि कमाल करेगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। ऐसी कोई नई इन्वेंशन निकालो। अच्छा है। वर्ग की सेवा तो हो रही है।

● विदेश के 125 भाई-बहनें मीटिंग के लिए आये हैं – सभी



हर मास तीव्र पुरुषार्थ का कोई नया-नया प्लैन बनाना चाहिए। राय देनी चाहिए, फिर फाइनल तो दादियाँ करेंगी। दादियाँ आपके साथी हैं, लेकिन इंजीनियर्स और साइन्टिस्ट को ऐसा कोई प्लैन बनाना चाहिए जो जल्दी-जल्दी नई दुनिया आ जाये। बस यही मीटिंग करते रहेंगे, प्लैन बनाते रहेंगे, कब तक? कोई तीव्र गति के प्लैन बनाओ क्योंकि लक्ष्य तो आपके वर्ग का है कि ऐसे प्लैन बनें जो अपना राज्य जल्दी-से-जल्दी आये। तो ऐसा भी प्लैन बनाओ और सेवा में भी थोड़े समय में ज्यादा सफलता प्रत्यक्ष दिखाई दे, ऐसे प्लैन बनाओ। ऐसे प्लैन बनायेंगे ना। लास्ट टर्न में सब रिपोर्ट सुनेंगे कि हर एक वर्ग ने सफलता को तीव्र बनाने का क्या प्लैन बनाया! सिर्फ बनाना नहीं है, 15 दिन उसका अभ्यास करना है, प्रैक्टिकल में लाना है। ठीक है ना! अभी प्रैक्टिकल होना है ना! एक-दो में सभी कहते हैं – बापदादा तो सबकी रूह-रूहान सुनते रहते हैं, सभी कहते हैं – प्रत्यक्ष हो, प्रत्यक्ष हो, लेकिन पहले प्रत्यक्ष आप तो हो जाओ। बाप भी आप द्वारा प्रत्यक्ष होगा ना!

● सेवा के लिए एवररेडी हैं, चाँस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हैं। लेकिन अभी सेवा में एडीशन करो – वाणी के साथ-साथ मंसा। अपनी आत्मा को विशेष कोई-न-कोई प्राप्ति के स्वरूप में स्थित कर वाणी द्वारा सेवा करो। मानो भाषण कर रहे हो तो वाणी से तो भाषण अच्छा करते ही हो लेकिन उस समय अपने आत्मिक-स्थिति में विशेष चाहे शक्ति की, चाहे शान्ति की, चाहे परमात्म-प्यार की, कोई-न-कोई विशेष अनुभूति की स्थिति में स्थित कर मंसा द्वारा आत्मिक-स्थिति का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाओ और वाणी के साथ-साथ संदेश दो। वाणी द्वारा संदेश दो, मंसा आत्मिक-

बापदादा बच्चों का खेल देखते हैं। स्वमान को दिल में वर्णन करते हैं – “मैं बापदादा का दिलतख्तनशीन हूँ”, वर्णन भी कर रहे हैं, सोच भी रहे हैं लेकिन अनुभव की सीट पर सेट नहीं होते। सबसे श्रेष्ठ अथॉर्टी अनुभव की अथॉर्टी है।

● बापदादा ने सभी का वेस्ट का चार्ट थोड़े समय का नोट किया है। चेक किया है। बापदादा के पास तो पावरफुल मशीनरी है ना। आप जैसा कम्प्यूटर नहीं है, आपका कम्प्यूटर तो गाली भी देता है। लेकिन बापदादा के पास चेकिंग मशीनरी बहुत फास्ट है। तो बापदादा ने देखा, मैजारिटी का वेस्ट संकल्प सारे दिन में बीच-बीच में चलता है। तो यह दिमाग को भारी कर देते हैं। पुरुषार्थ को भारी कर देते हैं, बोझ है ना तो वह अपने तरफ खींच लेता है। इसलिए शुभ संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, सीढ़ी भी नहीं है, लिफ्ट है, वह कम होने के कारण, मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है।

● साइंटिस्ट एवं इंजीनियर्स विंग (बैनर दिखाया – निमित्त, निर्माणता से नवनिर्माण, ज्ञान-विज्ञान जागृति अभियान) अच्छा बनाया है। अभी साइंटिस्ट और इंजीनियर्स डिपार्टमेंट को ऐसा कुछ करके दिखाना है जो लोगों को अनुभव हो कि साइलेंस की शक्ति साइंस को भी रिफाइन और प्रगति में ला सकती है। साइंस और साइलेंस का मिलन क्या-क्या कर सकता है, वह विशेष पहले प्वाइंट्स निकालो और फिर वह फैलाओ। साइंस वालों को पता पड़े कि साइलेंस हमारे साइंस में क्या सहयोग दे सकती है, क्या उन्नति हो सकती है, ऐसा अनुभव स्वयं करो और कराओ भी। अच्छा है, बापदादा खुश है, हर

मिलकर ऐसा कोई ज्वाला स्वरूप प्रोग्राम बनओ, साधारण प्लैन नहीं, ज्वाला रूप प्लैन बनाओ। एक तो सब ज्वाला रूप हो जाएँ, बन जाएँ। स्व में ज्वाला स्वरूप और सेवा में ऐसे इन्वेंशन निकालो जो शॉर्टकट हो क्योंकि आजकल के समय अनुसार लोगों को सबसे बड़ी समस्या समय निकालने की है। तो ऐसा कोई प्लैन बनाओ, चाहे वृत्ति हो, चाहे दृष्टि हो, चाहे वायब्रेशन हो, थोड़े समय में वह समझ जाएं कि यहाँ से ही कुछ मिल सकता है। चुम्बक जैसी सेवा का प्लैन बनाओ। जैसे चुम्बक से कोई हटने चाहते हैं तो भी नहीं हटते हैं। दूर से ही समीप आ जाते हैं। ऐसे नया प्लैन बनाओ, डबल विदेशी हैं ना। इण्डिया वाले भी कर सकते हैं।

● बापदादा हर ब्राह्मण आत्मा के मस्तक में चमकता हुआ सितारा देखते हैं। बापदादा हर बच्चे को श्रेष्ठ स्वमानधारी, स्वराज्यधारी देखते हैं। तो आप सभी भी अपने को स्वमानधारी आत्मा हूँ, स्वराज्यधारी हूँ ऐसे ही अनुभव करते हो? अगर समृति में लाओ कि मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, तो सेकण्ड में कितनी लिस्ट आ जाती? लम्बी है ना! स्वमान, अभिमान को खत्म कर देता है क्योंकि स्वमान है श्रेष्ठ अभिमान। तो श्रेष्ठ अभिमान अशुद्ध, भिन्न-भिन्न देह-अभिमान को समाप्त कर देता है। जैसे सेकण्ड में लाइट का स्विच ऑन किया, अंधकार स्वतः भाग जाता है, अंधकार को भगाया नहीं जाता है या अंधकार को निकालने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। लेकिन स्विच ऑन किया तो अंधकार स्वतः समाप्त हो जाता है, ऐसे स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करो तो भिन्न-भिन्न देह-अभिमान समाप्त करने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मेहनत तब करनी पड़ती है जब तक स्वमान के स्मृति स्वरूप नहीं बनते।

से चेंज करो।

● जब साइंस लाइट हाउस द्वारा दूर तक लाइट दे सकती है तो क्या आप वायब्रेशन नहीं फैला सकते! सिर्फ दृढ़ संकल्प करो, करना ही है। बिज़ी हो जाओ। मन को बिज़ी रखेंगे तो स्वयं को भी फायदा और अन्य आत्माओं को भी फायदा होगा।

● साइंस इंजीनियर का बैनर देख रहे हैं (विज्ञान-आध्यात्मिकता का गठबंधन, करेगा सम्पूर्ण आपदा प्रबन्धन), लेकिन कमाल यह है कि जैसे साइंस प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा रही है, ऐसे साइलेंस पावर का ऐसा प्रैक्टिकल में अनुभव फैलाओ जो हर एक के मुख से निकले कि साइंस-तो-साइंस है, लेकिन साइलेंस तो अपरमअपार है। क्योंकि धर्म वाले और साइंस वाले दोनों को प्रैक्टिकल साइलेंस का चमत्कार नहीं लेकिन साइलेंस का कार्य सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। साइंस भी देखो, समय को, चीज़ों को बिल्कुल सूक्ष्म बनाती जा रही है ना। तो साइलेंस पावर कितना शक्तिशाली बना रही है, यह अनुभव कराओ।

● हर वर्ग अपनी स्व-उन्नति का कोई भी प्लान बनाओ, कोई विशेष शक्ति-स्वरूप बनने का व विशेष कोई गुण मूर्त बनने का व विश्व-कल्याण प्रति कोई-न-कोई लाइट-माइट देने का। हर एक वर्ग आपस में निश्चित करो।



एक वर्ग काम में तो लगा हुआ है। मनन करना शुरू किया है, अभी मनन से मक्खन निकालो। कोई ऐसे विशेष अनुभव उन्हों के सामने रखो क्योंकि आजकल प्रैक्टिकल अनुभव का प्रभाव ज़्यादा पड़ता है। टॉपिक पर भाषण करते हो लेकिन भाषण में भी विशेष प्रैक्टिकल अनुभव सुनाने का लक्ष्य रखो। बाकी अच्छा कर रहे हैं, अच्छा है, यह भी चांस मिल जाता है, विधि अच्छी बनाई है। अच्छा मुबारक हो। जो किया है उसकी भी मुबारक और आगे जो करेंगे उसकी इन एडवांस मुबारक हो। (इस विंग के सदस्यों ने दो गुण विशेष धारणा के लिए रखे हैं, निमित्त भाव और निर्माण)। बहुत अच्छा किया है, करते रहना और लक्ष्य को पक्का रखना।

● आई.टी.ग्रुप से – सेवा का कोई नया प्लैन बनाया है? (ब्रह्माकुमारीज़ वेबसाइट को और अच्छा बनाना है) वह प्रैक्टिकल करके रिजल्ट लिखना। जैसे अफ्रीका वालों ने रिजल्ट लिखी ना, ऐसे आप लोग भी रिजल्ट भेजना। मुबारक हो, उमंग है, उत्साह है, वहाँ सफलता है-ही-है। बहुत अच्छा किया। तो पहले यह चेक करो कि मन की कण्ट्रोलिंग पावर है? सेकण्ड में जैसे साइंस की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच ऑन करो, स्विच ऑफ करो। ऐसे मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कण्ट्रोल कर सकते हो? लेकिन बापदादा देखते हैं कि संकल्प शक्ति के जमा के खाते पर अभी साधारण अटेन्शन है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। संकल्प के आधार पर बोल और कर्म ऑटोमैटिक चलते हैं। अलग-अलग मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं है कि आज बोल को कण्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अटेन्शन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अटेन्शन

